رسول الله

www.rasoulallah.net

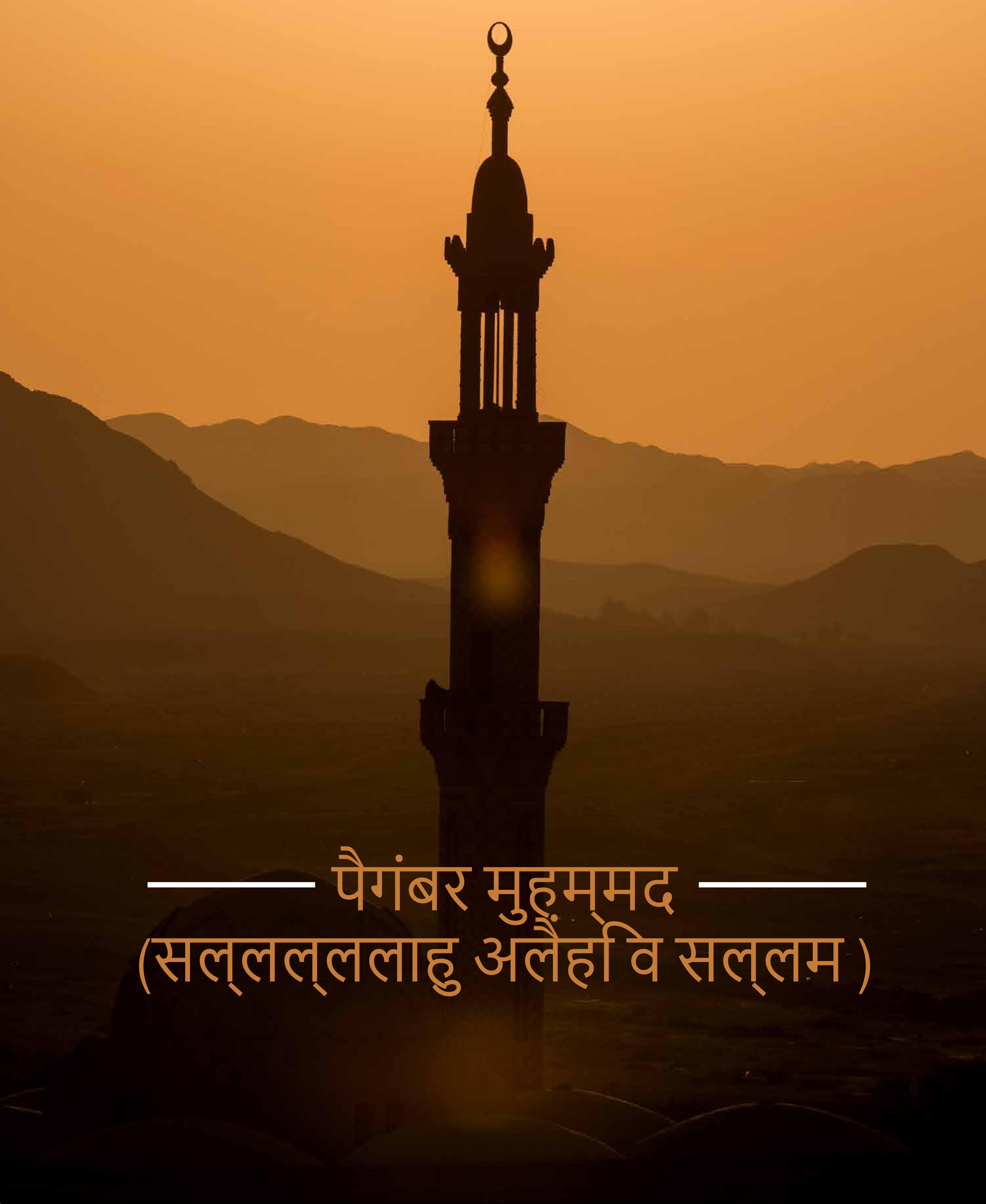

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

Sheikh/ Faraj Hadi

Not for Sale

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

सूचिपृष्ठ

03 मुखबंध
04 अपने आप के साथ
05 अपने परिवार के साथ
07 सत्य और न्याय के व्यक्ति थे

08 अच्छी नैतिकता वाले व्यक्ति थे
09 ज्ञान और सभ्यता (संस्कृति) के व्यक्ति थे
11 सहनशीलता के व्यक्ति थे
13 धर्म और राज्य वाले व्यक्ति थे

14 स्वच्छता और पर्यावरण की देखभाल करने वाले व्यक्ति थे
16 सौंदर्य और लालित्य के व्यक्ति थे
17 का आदर्श वाक्य थी
19 धैर्य (सहनशीलता) और सुंदर व महान
क्षमा करने वाले व्यक्ति थे
21 आसानी और सरलता वाले व्यक्ति थे
22 मृदु हृदय वाले साथी थे
24 महान और उच्च व्यायाम को प्रोत्साहित करते थे।
25 विशिष्ट और असाधारण नागरिय नियोजन के निर्माता हैं

27 एक महान शिक्षक थे।
29 युध्द में (कुलीन योद्धा)
39 की नैतिकता क़ुरआन थी

मुखबंध

अल्लाह ने मनुष्यों को बनाया और उनके पास नबी और पैगंबर भेजे, और चमत्कारों के साथ उनका समर्थन कयिा ताक िवे चमत्कार इस बात पर संकेत करें क िवे पैगंबर जसि चीज़ और कार्य की ओर बुला रहे हैं वह सच और सही है, और ताक िवे चमत्कार लोगों पर हुज्जत (प्रमाण) हो जाऐं ताक िकोई व्यक्त ियह न कह सके क ि हमारे पास (अल्लाह के अज़ाब से) कोई डराने वाला नहीं आया, और न ही कोई पैगंबर आया ताक ि हमें अच्छाई का रास्ता वताता और बुराई से मना करता, पैगंबर और नबी सबसे अच्छे लोग हैं। अल्लाह ने उन्हें चुना ताक िवे (लोगों तक) उसका संदेश पहुंचाऐं, और उन्हें अल्लाह की एकता बयान करने की ओर बुलाऐं और उन्हें शर्कि, कुफ्र और गुनाह से डराऐं। सबसे अंतमि पैगंबर व नबी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहवि सल्लम) सबसे अच्छे नैतकिता वाले मानव थे, जैसा क ि अल्लाह ने अपने नबी (सल्लल्ललाहु अलैहवि सल्लम) की नैतकिता को बयान करते हुए फरमाया :

وإنك لعلى خلق عظيم

(और बेशक तुम्हारे एख़लाक़ बड़े आला दर्जे के हैं)
अतः पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहवि सल्लम) की महानता का उनके स्वयं गुणों,उनकी शुद्धकिरण उनकी उच्च नैतकिता के माध्यम से पता चलती है, अत: पैगंबर (सल्लल्ललाहु अलैहवि सल्लम) का व्यक्तत्वि और उनकी दुरस्ती और सुधार सभी व्यक्तत्वि और सुधार से अधकि है, उनके कर्म सभी के कर्मों से अच्छे थे फोक़यित ले गये, और वह सारी मानवजात िके लएि दयालुता और उसके सबसे बड़े सुधारक हैं, पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहवि सल्लम = उन पर अल्लाह की दयालुता हो) ने राजाओं की तरह घातक युध्द या मानवजात िको गुलाम बनाने का संदेश नहीं दयिा बल्क िवह तो अपने अल्लाह की ओर से एक ऐसा सदेंश लाये जसिका लक्ष्य दयालुता, और लोगों के बीच समानता व बराबरी स्थापति करना, समाज को बचाना और उसे पवत्रि करना, और इस लक्ष्य में कठोरता और कोमलता के बीच का रास्ता चलना और दूरदर्शति, अन्तर्दृष्ट िऔर दया से काम लेना, और अल्लाह की पवत्रि कतिाब के अनुसार अ़मल करना।

पैगंबर मुहम्मद
(सल्लल्ललाहु अलैहिवि सल्लम)

अपने आप के साथ

वह एक महान व्यक्ति थे, उन्होंने महानता को बनाया महानता ने उन्हें नहीं, उन्होंने अपने सिद्धांत पर अपने आत्मविश्वास और दृढ़ता(स्थिरता) के माध्यम से अपनी महानता का निर्माण किया,वह अपने दुश्मनों और दोस्तों सभी लोगों के साथ अच्छे व्यवहार,उच्च नैतिकता,कोमलता ,विनम्रता और सरलता से मिलते थे, तथा उसके अलावा भी जटिलता, दिखावा, ढोंग और अहंकार से दूर उनके महान गुण थे।

वह अपने आप के साथ निष्कपट, ईमानदार और अपने सिद्धांत से संतुष्ट थे, उनके विशिष्ट लक्ष्य और स्पष्ट दृष्टि थे, वह अपने सिद्धांतों पर कायम रहे यहां तक कि उन्होंने दिव्य संदेश लोगों तक पहुंचा दिया और अपने उन सभी महान सिद्धांतों को फैला दिया जिन्हें अधिक वे लोग नहीं जानते हैं जो उनसे घृणा करते हैं और उनका अपमान करते हैं।

उनके अन्दर वे सभी अच्छे गुण थे जिन्हें अच्छी प्रकृति चाहती है और वह मानव पूर्णता की उन सभी विशेषताओं के मालिक थे जिनकी बुद्धिमान इच्छा करते हैं। जन्मजात सुन्दरता को नैतिक और मानसिक सुन्दरता के साथ मिलाया गया ताकि एक शिक्षक बन सका जिसने दुनिया को सूर्य के समान अंधकार से जगाया और मानव जाति को दोबारा जीवित किया जिसे अज्ञानता और स्वार्थपरता ने मार दिया था।

पैगंबर मुह़म्मद
(सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)

अपने परविार के साथ

पैगंबर मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) के निजी जीवन को पढ़ने वाला को ,उस व्यक्ति पर आश्चर्य होगा, कि जो अज्ञानता और अराजकतावाद से भरे हुए कठोर और रेगिस्तान वातावरण से आया तो वह अतुलनीय पारविारकि सफलता के उच्चतम स्तर तक कैसे पहुंच सकता है?

पैगंबर मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) प्रेम,वत्सलता (प्रीतियुक्तता), कोमलता और अच्छी भावनाओं के एक अटूट धारा थे।

वह अपने परविार और पत्नियों के लिए वफादार और उत्तम प्रेमी थे। वह उनके साथ खेलते भी थे और मजाक भी करते थे। तथा वह उन्हें प्रेम, प्रीतयिुक्तता और कोमलता देते थे। अतः वह (उदाहरण के लिए) वह अपनी पत्नी आ़एशा से अपने प्यार का इज़हार इस प्रकार करते थे कि वह कुछ पीने के लिए अपने होंठ बर्तन पर उस जगह रखते थे कि जिसि जगह से हजरत आ़एशा पीती थीं उन्हें एक ऐसा गुप्त संदेश देते हुए जो की उनके दलि को खुश करदे और उनकी भावनाओं को हलिाकर रख दे, और इस जैसे उनके जीवन में बहुत उदाहरण हैं।

यहां तक कि उन्होंने एक खुशहाल परविार में वफादार प्रेमी का प्रतिनिधित्वि किया, अतः वह अपनी मृत पत्नी ख़ादीजा को नहीं भूले बल्कि वह उनके रिश्तेदारों के साथ अच्छे संबंध बनाए रख कर उनसे अच्छा व्यवहार करते बल्कि उन्हें उपहार भेजते थे और इस तरह हज़रत आएशा के फज़्ल और अच्छाई को याद करते रहते थे, और जब उनकी उपस्थिति में हज़रत खदीजा के बारे में कुछ कहा जाता (यानी कुछ अपमान किया जाता) तो वह बहुत क्रोधित होते थे।

अतः अबू नजीह ने हाला - हज़रत ख़ादीजा की बहन - की उस कहानी में उल्लेख किया कि जिसि में हाला ने पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वि सल्लम) से मिलने की अनुमति मांगी, हज़रत आएशा कहती हैं कि अल्लाह ने आपको बूढ़ी पत्नी- इस से उनका मतलब ख़ादीजा थीं - के बदले में युवा पत्नी दे दी, तो इस बात से पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वि सल्लम) क्रोधित हो गए, यहां तक कि मैंने कहा "मैं उस अल्लाह की कसम खाती हूं जिसिने आप को सच्चाई के साथ भेजा कि आज के बाद में ख़ादीजा को अच्छाई ही से याद करुंगी। "
(बुख़ारी)

इस्लामी राज्य के प्रमुख,सेना के कमांडर और अपने अनुयायियों के नैतिक और बौद्धिक मार्गदर्शन के रूप में पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वि सल्लम) पर भारी और बहुत अधिक बोझ होने के बावजूद भी वह अपने परविार के प्रति अपने कर्तव्यों को नहीं भूले, बल्कि वह गृहकार्य में अपनी पत्नियों की सहायता करते थे, जो यह बताता है कि महिलाओं का इस्लाम में बहुत बड़ा महत्व है।

हज़रत अल अवसाद कहते हैं कि मैंने हज़रत आऐशा से पूछा कि पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वि सल्लम) अपने घर में क्या करते थे? तो उन्होंने कहा " वह घर के कामों में अपने परविार की सहायता करते थे और जब नमाज़ का समय हो जाता तो नमाज़ पढ़ते थे।" (बुख़ारी)

पैगंबर मुह़म्मद
(सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)

सत्य और न्याय के व्यक्ति थे

वह सत्य और न्याय से प्यार करते थे और इसी के अनुसार फ़ैसले भी करते थे, और न ही वह सत्य कहने और न्याय का फैसला करने में भर्त्सना करने वाले की भर्त्सना की परवाह करते थे, अतः वह किसी की भी उसके बढ़े दर्जे, शोहरत, धन, वंश और संतान की वजह से चापलूसी नाहीं करते थे बल्कि आपके यहाँ कमज़ोर शक्तिशाली होता था यहां तक कि वह अपना अधिकार ले लेता था और शक्तिशाली आपके यहाँ कमज़ोर हो जाता था यहां तक कि उस से अधिकारयुक्त को उसका अधिकार वापस दिलिवा दीया जाता था। न्याय और सत्य के उस महान दर्जे को पहुंचे हुए थे कि वह इस बारे में किसी की भी नही सुनते थे अगरचे वह उस से सबसे अधिक प्रम करते हों, अतः एक बार यह हुआ कि एक महिला ने जो कि अपने परिवार में महान थी कुछ चीज चुरा ली, इसीलिए उर उसके अपराध की सजा अवश्यक हो गई, तो उसके परिवार वाले पैगंबर के अनुयायियों में से एक के पास गए -और वह पैगंबर मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) के लिए सभी व्यक्तियों में प्रिय था-ताकि वह पैगंबर (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) से उस महिला के लिए से क्षमा का निवेदन करे, तो वह व्यक्ति पैगंबर (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) के पास गया और उनसे क्षमा करने के लिए निवेदन किया, तो हज़रत मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने जब यह बात सुनी तो आप (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) उस व्यक्ति से उसके के एक मुस्लिम होने के बावजूद न्याय की पवित्रता को तोड़ने की कोशिश करने के कारण बहुत ज़्यादा क्रोधित हुए हा़लांकि वह व्यक्ति उनके लिए सब से प्रिय था।

हज़रत आ़एशा उल्लेख करती हैं कि कुरैश मख़ज़ूम परिवार की उस महिला के बारे में बहुत चिंतित हूऐ जिसने चोरी की थी, इसलिए उन्होंने सोचा कि इस मामले में पैगंबर (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) के सामने बोलने की हिम्मत सिवाय ओसामा बिन ज़ैद(जो पैगंबर (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) के लिए सबसे प्रिय है) के किसी में नहीं है । हज़रत ओसामा ने पैगंबर (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) से बात की, उन्होंने कहा : “क्या तुम अल्लाह की सीमाओं (उसके नियमों) में से एक में सिफारिश कर रहे हो? फिर आप खड़े हुए और भाषण देते हुए कहा:" तुम से पहले के लोगों को इसी बात ने नष्ट किया था, क्योंकि उन में अगर कोई माननीय व्यक्ति चोरी करता तो वे उसे ऐसे ही छोड़ देते और दंडित नहीं करते, और अगर कोई कमज़ोर व्यक्ति चोरी करता तो उसे सज़ा देते थे (यानी किसी भी अपराध को करते समय केवल कमजोर को दंडित करते थे।)....."(मुस्लिम)

पैगंबर मुहम्मद
(सल्लल्ललाहु अलैहि वि सल्लम)

अच्छी नैतिकता वाले व्यक्ति थे

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि वि सल्लम) की सबसे सुंदर विशेषताओं में से जिन में वह सभी लोगों से अलग हैं एक विशेषता यह है कि वह अपने पास और दूर वाले, शत्रु और मित्र सभी लोगों के साथ उच्च नैतिकता से मिलते थे और यह बात हर एक न्यायी व्यक्ति जानता है।

वह सभी लोगों से अच्छे से मिलने वाले व्यक्ति थे, उनके चेहरे पर सदैव मुस्कान रहती थी, सदैव अच्छी बात करते थे, बुराई का बदला वह अच्छाई से देते थे,और तुच्छ बातों में वह कभी दख़ल नहीं देते थे।

उनके अनुयायियों यह जानते थे कि सबसे अच्छा व्यक्ति वह है कि जिसके अख़लाक़ सबसे अच्छे हों, क्योंकि पैगंबर (सल्लल्ललाहु अलैहि वि सल्लम) ने कहा: तुम लोगों में सबसे अच्छा वह है जिसके अख़लाक़ सबसे अचछे हों " बल्कि उन्होंने अपने अनुयायियों को यह शिक्षा दी कि स्वर्ग में उनके सबसे ज्यादा पास वह व्यक्ति होगा जिसके अख़लाक़ सबसे अचछे हों, अतः उन्होंने कहा :

मुझे सबसे प्रेमी और क़ियामत के दिन मेरे सबसे पास रहने वाला वह व्यक्ति है कि जिसके अख़लाक़ सबसे अचछे हों"।
पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि वि सल्लम) के अच्छे अख़लाक़ और उनके अच्छे व्यवहार केवल अपने अनुयायियों के साथ ही नहीं थे बल्कि अपने शत्रुओं के साथ भी थे, तो जब पैगंबर (सल्लल्ललाहु अलैहि वि सल्लम) से अपने दुश्मनों पर शाप देने के लिए कहा गया, तो उन्होंने मना कर दिया और कहा : "मुझे अल्लाह द्वारा अभिशाप के लिए नहीं भेजा गया है, बल्कि मैं (सारे संसार के लिए) दयालु बनाकर भेजा गया हूं।

पैगंबर मुहम्मद
(सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)

ज्ञान और सभ्यता (संस्कृति) के व्यक्ति थे

शायद अन्यायपूर्ण त्वरति और उतावला या फरि पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)को ईमानदारी से न पढ़ने वाला यह कहे कि वह ज्ञान और सभ्यता के खिलाफ थे, और उसका ऐसा कहना शायद इन दनिों कुछ मुसलमिों की स्थिति देखते हुए हो, तो वह उन्हीं कुछ मुसलिमों की के स्थिति के कारण पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) और इस्लाम धर्म के बारे में यह बात कहे, लेकनि वास्तव में यह एक बहुत बड़ा अन्याय है और ज्ञानकि अनुसंधान व खोज की नैतिकता के खिलाफ है,क्योंकि एक ईमानदार शोधकर्ता और वैज्ञानकि अनुसंधान की नैतिकता को लागू करते हुए खोज करने वाला यह बात अवश्य स्वीकार करेगा कि पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने अनुयायियों के लिए ज्ञान के ऐसे मूल और सभ्यता के ऐसे नियिम बनाए थे जनि पर उन्होंने एक मज़बूत और शक्तिशाली राष्ट्र बनाया, और जनिके कारण उन्होंने पूरी दुनिया में विज्ञान, अच्छी सभ्यता और संस्कृति, अच्छी नैतिकता और महान सद्धिांत फैलाए, और सारी मानवजाति उनदुलुस की उस इस्लामकि सभ्यता कि महानता को अभी तक याद करती है कि जसिके कारण सारे संसार और विषेश रूप से युरोप के ज्ञान और सभ्यता में क्रांति आ गयी।

वह कैसे ज्ञान और सभ्यता के व्यक्ति न होंगे जबकि उनकी पवत्रि पुस्तक (कुरान) में उन पर सबसे पहले उतरने वाला शब्द "पढ़ " था जसिके द्वारा पढ़ने का आदेश दयिा गया, इसके

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)

अलावा पवित्र कुरान में एक सुरह है जिसका नाम कलम है जो ज्ञान प्राप्त करने का पहला साधन और उपकरण है।

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने अपनी जनता को अंधेरे, जहालत, पीछे रहने, अन्याय, और अत्याचार से निकाला और उसे प्रकाश, ज्ञान और तरक्क़ी की ओर ले गए, उन्होंने सभ्यता के ऐसे मूल और नियम निर्माण किया जिन्होंने आत्मा और शरीर की जरूरतों को संतुलित किया और उनके अनुयायियों को दशकों तक दुनिया का नेतृत्व करने में मदद मिली जब वे इन मूलों और नियमों को मज़बूती से पकड़े रहे। लेकिन इस समय उनके अनुयायी जो ज्ञान और सभ्यता में पीछे हैं तो उसका कारण अमेरिकी और यूरोपीय उपनिवेशवाद है जिसने इस्लामी दुनिया में अपने कर्मचारियों को फैला दिया है और सभी कामों की बागडोर उनके के नियंत्रण में कर दी है ताकि वे पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)की सभ्यता के मूल सिद्धांतों के आधार पर बनी हुई हर साहित्यिक ज्ञानी आंदोलन को बाधित और अवरुद्ध करें।

पैगंबर मुहम्मद
(सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)

सहनशीलता के व्यक्ति थे

बुरे प्रचार और झूठे आरोप और दावे जिनमें थोड़ी भी इलमी ईमानदारी नहीं है, और जिस ने पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हकीकत भ्रष्ट करदी कि वह एक ऐसे सरदार और लीडर थे जो सहनशीलता का विरोध करते थे, अन्यथा वास्तव में पैगंबर मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) जीवन के सभी कार्यो में सहनशीलता के आमंत्रणकर्ता थे, उनका व्यावहारिक जीवन महान सहनशीलता के उदाहरणों से भरा है, उनमें से एक यह कि कुछ यहूदी मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)की मृत्यु के लिए प्रार्थना करते थे, और उन्हें यह वहम दिलाते थे कि वे उनका स्वागत कर रहे हैं, क्योंकि वे उनसे:

"अस्सलामु अ़लैकुम "(अर्थ: तुम पर सलामती और शान्ति हो) कहने की बजाय (अस्सामु अ़लैकुम) कहते थे, जिसका अर्थ है " तुम पर मृत्यु हो ", पैगंबर मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) उनके इस बुरे इरादे को समझ गये लेकिन पैगंबर मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) महान सहनशीलता वाले व्यक्ति थे, ज़रा सोचो कि अगर उनकी जगह आप होते तो क्या करते और आपकी क्या प्रतिक्रिया होती ? मैं पैगंबर मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की प्रतिक्रिया आपको बाद में बताउंगा, आप कल्पना करें कि आप एक ऐसे शासक या राजा हैं जिसकी प्रजा उसकी आज्ञाकारी है या आप आज्ञा देने वाले लीडर और नेता हैं, और फिर कोई व्यक्ति आपके लिए मृत्यु की प्रार्थना करे और इससे भी बदतर यह कि वह आपको धोखा देता है और आपको यह बात पता चल जाये, तो हो सकता है कि आप अपनी मृत्यु के लिए उसकी प्रार्थना में उसे क्षमा कर दें लेकिन आप उसके धोखे को माफ नहीं कर सकते।

पैगंबर मुहम्मद
(सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)

न्यायपूर्ण पाठक! अब में तुम्हें ऐसी नाजुक हालत में पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की प्रतिक्रिया बताता हूँ ताकि तुम अपने आप ही फैसला करो, तो सूनो, एक दिन पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)

अपनी पत्नी हज़रत आएशा के साथ बैठे हुए थे, तभी कुछ यहूदी आपके पास से गुज़रे, और उन्हें अपमानित करने और गाली देने के लिए उन्हें सलाम करने का नाटक किया लेकिन उनकी प्यारी पत्नी ने उनके शब्दों के बारे में उनके धोखे को समझ लिया और उन्हीं जैसे अपमानजनक शब्दों के साथ उन लोगों को जवाब दिया।

लेकिन अब प्रश्न यह है कि क्या पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) इस जवाब से संतुष्ट और सहमत थे? क्या वह इस बात से प्रसन्न हुए कि उनकी पत्नी ने उन्हें अपमानित करने वालों को अभिशाप दिया?

उत्तर : नहीं, वह अपनी पत्नी के इस तरह के जवाब देने से सहमत और प्रसन्न नहीं थे, बल्कि उन्होंने अपनी प्यारी पत्नी को चेतावनी देते हुए उन्हें सहनशीलता और कोमलता का आदेश दिया और हिंसा और कठोरता से मना किया।

हज़रत आएशा से उल्लेख है वह, कहती हैं :

यहूदी नबी को सलाम करते थे तो :"अस्सामु अलैकुम " कहते थे(जिसका अर्थ है "तुम पर मृत्यु हो") आएशा (पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की पत्नी) ने उनकी यह बात समझ ली और जवाब दिया:" मौत और अभिशाप तुम पर हो " तो नबी (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : रुको आएशा! "अल्लाह को सभी कामों में कोमलता प्यारी है " (मुस्लिम)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

धर्म और राज्य वाले व्यक्ति थे

इतिहास में कितने नेताओं, राजाओं और महान व्यक्तियों ने गौरव और महिमा का निर्माण करने और एक मानव संदेश स्थापित करने की कोशिश की, लेकिन इतिहास में कोई भी व्यक्ति दुनिया के लिए ऐसा तंत्र और क़ानून ना बना सका जो शरीर और आत्मा दोनों की आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

लेकिन पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) दुनिया के लिए एक ऐसा नया कानून और तंत्र लाये कि जिसमें उन्होंने आत्मिक भाग को शरीरिक भाग से इतने अच्छे तरीके से मिलाया कि दुनिया में पाया नहीं गया। अतः उन्होंने एक ऐसे राज्य बनाया जो बिना धर्म के जीवित नहीं रह सकता, और ऐसे धर्म का निर्माण किया जो उस राज्य और उस सरकार के अलावा कोई दुसरा को स्वीकार नहीं कर सकता।

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने भौतिकवादी जीवन के कारण लगी हुई आत्मा की चोटों को ठीक किया, और इसी तरह से उन्होंने भौतिक आवश्यकताओं के उस छेद को भर दिया जो केवल आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने के कारण हो गया था।

इसलिए वह सच्चे आध्यात्मिक शिक्षक, ईमानदार राजनेता और न्यायप्रिय न्यायधीश थे।
उन्होंने जंगली जनजातियों को सभ्य लोगों में एकीकृत किया, और उन लोगों को एक ऐसे राष्ट्र में एकीकृत किया जिस ने महिमा का निर्माण किया और इस
विश्वास पर जीवन बनाया कि ईश्वर(अल्लाह)केवल एक ही है।
(अल्लाह के अलावा अन्य कोई भी पूजा के योग्य नहीं और मुहम्मद अल्लाह के पैगंबर हैं)

पैगंबर मुहम्मद
(सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)

स्वच्छता और पर्यावरण की देखभाल करने वाले व्यक्ति थे

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) के जीवन और उनके धर्म की विशेष विशेषताओं में से एक यह कि उन्होंने अपने अनुयायियों को ऐसी कठोर और महान शिक्षाएं दी हैं जो स्वच्छता पर पूरा ध्यान देने और पर्यावरण की रक्षा करने की बहुत चिंता करने को उन पर ज़रूरी करती है।.

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)ने अपने अनुयायियों को दिन में पांच या उससे अधिक बार शरीर के उन विभिन्न अंगों व हिस्सों जैसे चेहरा, मुंह, नाक, हाथ और पैर को धोने का आदेश दिया जिन्हें गन्दगी लग जाती है और जिनके द्वारा कार्य होते हैं, और पूरे शरीर को जितनी बार संभव हो धोएं, यानी नहाएं।

उन्होंने लोगों के आसपास के क्षेत्रों और स्थानों को गंदा करने और उन्हें प्रदूषित करने से चेतावनी दी।

उन्होंने अपने अनुयायियों पर मानव द्वारा होने वाली सभी गन्दगियों और कचरों की पूर्ण स्वच्छता और सफ़ाई की आवश्यकता पर जोर दिया।

उन्होंने अपने अनुयायियों के लिए गंदगी" निजासत" से अपने कपड़े साफ करने को वाजिब और ज़रूरी किया।

पैगंबर मुहम्मद
(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

उन्होंने अपने अनुयायियों को "चिकित्सा सिद्धांत " यानी स्वस्थ नियम सिखाया; क्योंकि बीमारियों के प्रसार और फ़ैलाओ को रोकने के लिए उन्हें आदेश दिया कि वे महामारी और वबा से पूर्ण स्थानों में प्रवेश न करें, और यदि वे पहले से ही वहां हों तो वहीं रहें, कहीं दुसरी जगह ना जाऐं। ताकि दुसरे लोग इस से सुरक्षित रहें।

तो पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)ने इन और अन्य बहुत सी शिक्षाओं द्वारा एक स्वस्थ और स्वच्छ वातावरण में पूर्ण सामाजिक तंत्र और क़ानून का निर्माण किया।

इसलिए कपड़े, शरीर और पूरे वातावरण में प्रदूषण और गंदगी के लिए पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की शिक्षाओं में कोई जगह नहीं है।

पैगंबर मुहम्मद
(सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)

सौंदर्य और लालित्य के व्यक्ति थे

यदि आप उन चीजों के बारे में पता करेंगे जिन्हें पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व) सबसे अधिक पसंद करते थे, तो आपको तीन चीजों मिलेंगी, उनमें से पहली चीज़ इत्र (खुश्बू) है।
वह अच्छी खुशबुओं को बहुत पसंद करते थे और इत्र (खुश्बू)का बहुत प्रयोग करते थे। और कभी भी उनके अन्दर से बदबू नहीं आई।

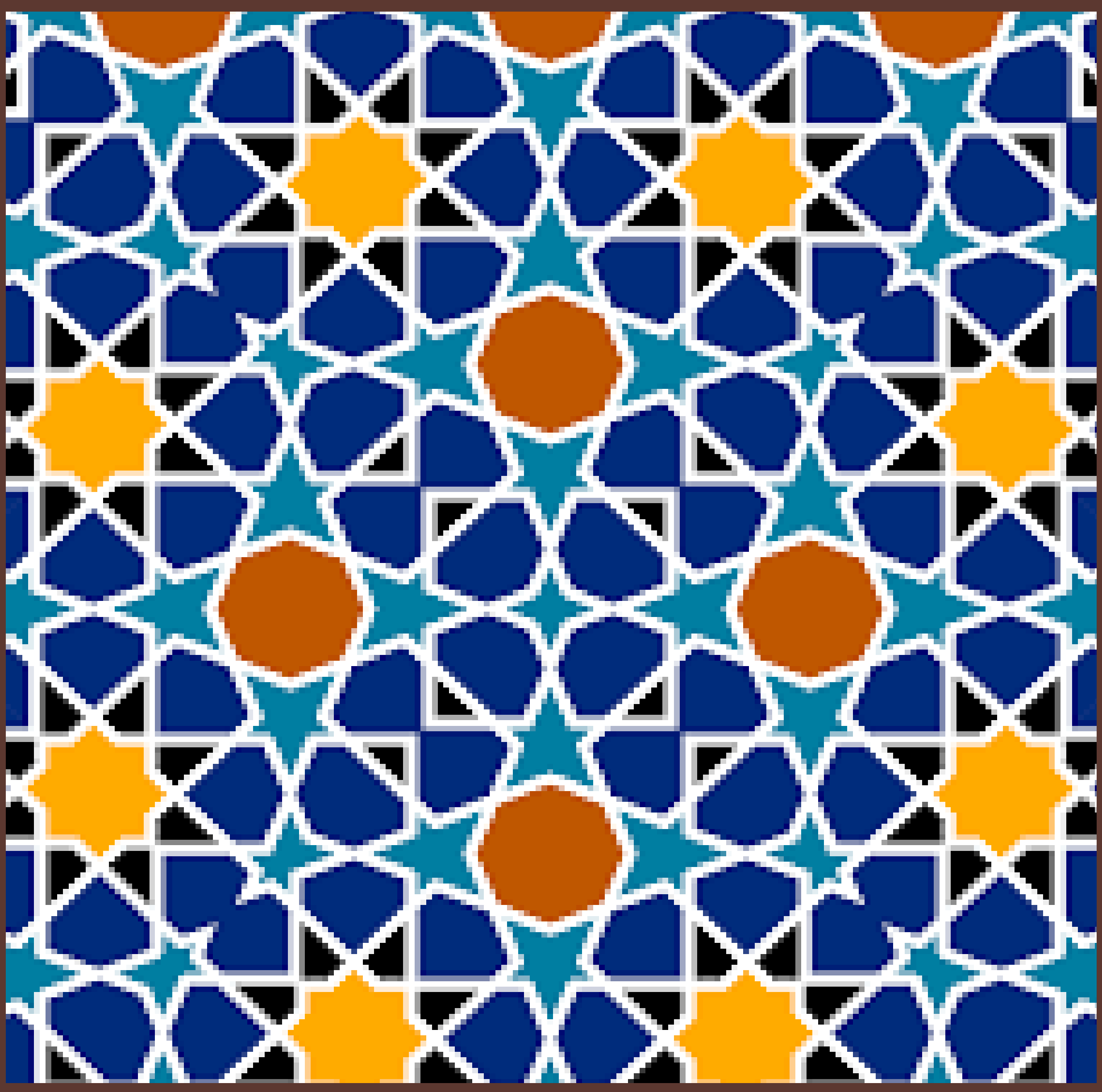

इसके अलावा पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) सभी लोगों से खूबसूरत और सूंदर थे और वह अपने कपड़ो में लोगों के बीच इस तरह चमकते थे जेसे आकाश में चाँद चमकता है।
और महान बात यह है कि पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) इस आकर्षक और सुंदर रूप के साथ इस तरह के समाज में प्रकट हुए जो लालित्य, सौष्ठव, सुंदरता और साफ़ाई - सुथराई से बहुत दुर था।
वह शुष्क रेगसि्तान में एक और सूंदर आकर्षक फूल, जमे हुए बर्फीले रेगसि्तान में गरम आग,और निर्जीव पृथ्वी में जीवन के फव्वारे और धारे की तरह थे।

पैगंबर मुह़म्मद
(सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)

का आदर्श वाक्य थी

सामाजिक संकटों और मानसिक रोगों से भरे हुए आज के इस ज़माने में हर समय हमें अपने चेहरे पर उसी तरह मुस्कान बनाए रखना बहुत ज़्यादा महत्वपूर्ण और आवश्यक है जैसे कि पैगंबर मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने अनुयायियों को हर समय रखने के लिए कहा था।

पैगंबर मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने अनुयायियों को जो उनकी शिक्षाओं का पालन करें सभी जीवन के सभी संकटों और समाज के दबावों और मानसिक रोगों से मुक्त किया जो मानव के जीवन को कड़वा और ध्वस्त कर देते हैं, इस तरह पैगंबर (सल्लल्ललाहु अलैहि व)ने अपने अनुयायियों को खुशी और आंतरिक शांति दी।

पैगंबर मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)के दुखों और उनकी खुशियों में मुस्कान उनका का आदर्श वाक्य थी

वह सदैव मुस्कुराते हुए दिखाई देते थे, उनकी प्यारी मुस्कान से उनसे मिलने वालों के दुख दूर हो जाते थे और उनके अनुयायियों के घाव भर जाते थे।

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन अल हारिस से उल्लेख है, उन्होंने कहा :
" मैंने अल्लाह के पैगंबर (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से अधिक मुस्कान वाला कोई व्यक्ति नहीं देखा। " (तिर्मिज़ी)

लेकिन उन्होंने कभी भी बहुत ज़्यादा या खिलखिलाकर और ठट्ठा लगाकर हंसने से शालीनता और मर्यादा की सीमा को कभी भी पार नहीं किया, बल्कि वह विनम्रता और सम्मानपूर्वक से मुस्कुराते थे।

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन अल हारिस से उल्लेख है,वह कहते हैं :
पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)का हंसना केवल मुस्कराना था। " (तिर्मिज़ी)

इसका मतलब यह है कि वह अपान मुंह खोले और ठट्ठे लगाए बिना हंसते थे, क्योंकि ठट्ठे लगा कर और खिलखिलाकर हंसना अदब और वक़ारके ख़िलाफ़ है ।

पैगंबर मुहम्मद
(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

धैर्य (सहनशीलता) और सुंदर व महान क्षमा करने वाले व्यक्ति थे

जो भी महापुरुषों और राजाओं के इतिहास को पढ़ेगा तो वह पैगंबरों और नबियों के अलावा सभी में एक गुण और विशेषता सामान्य पाएगा, वह यह कि वे हारे हुए युद्धों का जीत जाने वाले युद्धों में बदला लेते थे।

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)ने विजेता की महानता का एक शानदार उदाहरण दिया।

वह मक्के से निकाले गए , उनकी संपत्ति उनसे छीन ली गई और उनकी नबुव्वत की शुरुआत में मक्के लोगों ने उन्हें बुरी तरह से सताया और उन पर बहुत ज़्यादा अत्याचार किया, लेकिन जब पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्के में भारी जीत के साथ प्रवेश किया, तो इतने अत्याचार के बावजूद भी उनकी व्यक्तित्व की महानता और उनकी नैतिकता की सुंदरता ने उन्हें उन मक्का वालें से बदला लेने की अनुमति नहीं दी।

बल्कि उन्होंने उन सभी लोगों को माफ कर दिया था, जिन्होंने उन पर बहुत अत्याचार किए थे, जबकि वह उनसे उन अत्याचार का बदला लेने की पूरी क्षमता रखते थे।
और उनसे कहा :
" जाओ तुम मुक्त हो। "
इस तरह से इस्लाम ने पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व

पैगंबर मुहम्मद
(सल्लल्ललाहु अलैहवि सल्लम)

सल्लम) और उनके अनुयायियों को ऐसी परष्किृत शक्षिाएं और शुद्ध नैतकिता पर पाला पोसा जन्हिोंने उन्हें स्वार्थ (स्वार्थपरता) और खुदग़रज़ी की बेड़ियों से मुक्त कर दिया।

और वे ऐसे क्यों न हों जबकि उन पर उतरने वाला पवत्रि क़ुरआन कहता है। :

(क्षमा की नीत अपनाओगे, और सदाचार का आदेश दो और अज्ञानियों की ओर ध्यान न दें।)
(सूरह अल आ़राफ़: 199)

पैगंबर मुहम्मद
(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

आसानी और सरलता वाले व्यक्ति थे

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)लोगों पर आसानी करना और उनके कार्यों को सरल बनाना पसंद करते थे। और उन्हें लोगों पर कठोरता और सख्ती करना और उन पर कार्यों में तंगी करना पंसद नहीं था।

इसलिए कि उन्होंने अपने अनुयायियों को यह आदेश दिया कि:

लोगों को (अच्छी और खुशी की ख़बर सुनाकर) खुश व प्रसन्न करो, और उन्हें अपने पास से दूर मत भगाओ, और (कार्यो में) आसानी करो, और तंगी व सख्ती, ना करो। "

और उन्होंने यह भी कहा :
" तूम आसानी करने यानी सरल बनाने वाले बना कर भेजे गए हो, तंगी व सख्ती करने वाले बना कर नहीं भेजे गए हो। "

पैगंबर मुह़म्मद
(सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)

मृदु हृदय वाले साथी थे

किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी जो किसी ऐसी चीज़ का अपमान करे जो आप के लिए वास्तव में बहुत ज़्यादा महत्वपूर्ण है और जिसे आप बहुत प्यार करते हैं?
यदि आप एक धार्मिक व्यक्ति हैं और कोई व्यक्ति आकर आपकी पूजा की जगह को बेरहमी और बुरी तरह से से गंदा करदे , तो आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी ?

इसमें कोई संदेह नहीं है कि आप क्रोध करेंगे और सीधे उसे दंड के लिए दौड़ेंगे। लेकिन पैगंबर मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने ऐसा नहीं किया।
क्योंकि वह जल्दी की प्रतिक्रियाओं में विश्वास नहीं रखते थे।और उन्हें अपनी प्रतिक्रियाओं पर पूर्ण नियंत्रण था। क्योंकि वह किसी भी कार्य को करने से पहले बुद्धिमित्ता व समझदारी से निर्णय लेते थे।निम्निलिखित कहानी यह सिद्ध करती है कि वह हर घटना का इलाज बड़ी चौकसी व होशियारी और दूरदर्शिता से करते थे।

देहात से एक व्यक्ति आया, जिसका उस नए शहर (मदीना) से कोई संपर्क नहीं था, जिसे मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने अनुयायियों के बीच अपनी नई नई राजधानी में बनाया था।
इस देहाती ने सभ्य शहर मदीना के लोगों के लिए बहुत ही अजीब व्यवहार किया।

आप जानते हैं कि वह अजीब काम और व्यवहार क्या था?
हां,वास्तव में सबसे अजीब व्यवहारों में से एक यह है कि कोई व्यक्ति एक सार्वजनिक और सम्मानित स्थान पर आकर सबके सामने पेशाब करे।
यही इस देहाती व्यक्ति ने किया था; अतः उसने मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) और उनके अनुयायियों के सामने मस्जिद में जो उनके लिए सबसे पवित्र जगह थी पेशाब कर दिया।

यह एक भयानक दृश्य था पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)के अनुयायियि खुद को नियंत्रित नहीं कर सके और वे उसे उसके उस बुरे व्यवहार से रोकने के लिए ज़ोर से चिल्लाए।

भले ही इस तरह की घटना में केवल कुछ ही सेकंड लगे, लेकिन मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने इसमें भी अपनी बुद्धि से काम लिया। अतः वह इन्हीं कुछ पलों में उस दिहाती की फ़ित्रत को पहचान लिया जिसने उनकी ईबादत करने और उनके राज्य के काम होने की जगह पेशाब कर दिया था। और उनकी बुद्धि ने उन्हें बता दिया था कि वह अनपढ़ है और उसका यह कार्य किसी दुश्मनी के कारण नहीं है।

बल्कि उसका यह कार्य स्वच्छता, सफ़ाई और शालीनता की उस संस्कृति से पिछड़ेपन का परीणाम है जो कि मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)ने अपनी राजधानी (शहर मदीना) में स्थापित की थी।

इसलिए उन्होंने ने अनुयायियों को आदेश दिया कि वे उस दिहाती को डांटें ना और उस पर सख़्ती ना करें।

और जब वह पेशाब करके समाप् हो गया तो मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) खुद उसके पास आए और उसके साथ प्यार और नरमी से बात की और उस कहा कि यह पेशाब करने की जगह नहीं है।

अतः वह दिहाती व्यक्ति मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की अच्छी शिक्षा, उनके अच्छे व्यवहार और उनकी सूंदर नैतिकता से बहुत प्रसन्न हुआ, और कहा :

" ऐ अल्लाह! मुझ पर और मुहम्मद पर दया(रहम) कर, और हमारे साथ किसी अन्य पर दया मत कर। "

पैगंबर मुह़म्मद
(सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)

महान और उच्च व्यायाम को प्रोत्साहति करते थे।

पैगंबर मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)ने अपने अनुयायियों को महान और उच्च व्यायामों को करने(या इस तरह के खेलों का अभ्यास करने) पर प्रोत्साहति किया, जो तन धन और आत्मा को बर्बाद और नैतिकिता को भ्रष्ट किए बिना शरीर को मज़बूत बनाने, आत्मा को आराम देने और समाज को लाभ पहुंचाने पर आधारति थे।

उन्होंने स्वयं कुछ व्यायामों जैसे दौड़, कुश्ती और घुड़सवारी का अभ्यास किया।

लेकनि पैगंबर मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)के संवधिान में खेल के लिए यह शर्त है कि वह महान व्यायाम, और उच्च नैतकिता और उदात्त लक्ष्यों के साथ हो।

पैगंबर मुहम्मद

(सल्लल्ललाहु अलैहवि सल्लम)

वशिषि्ट और असाधारण नागरयि नयिोजन के नर्िमाता हैं

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहवि सल्लम) ने एक बंजर रेगसि्तान में जो एक अनूठी और अद्भुत सांस्कृतकि प्रणाली का नर्िमाण कयिा जो पहले कसिी ने कभी नहीं देखा थी। और यह योजना की सटीकता व महानता और आकर्षक व सुंदर रूप से राज्य और समाज के हतिों का ध्यान रखने में सबसे अलग और नरिाली थी।

अतः मस्जदि राजधानी केंद्र तथा नयिंत्रण और कमान केंद्र थी।
और यही मस्जदि महत्वपूर्ण घटनाओं और आपात स्थतियिों के दौरान शहर और लोगों के लएि सम्मेलन केंद्र थी।

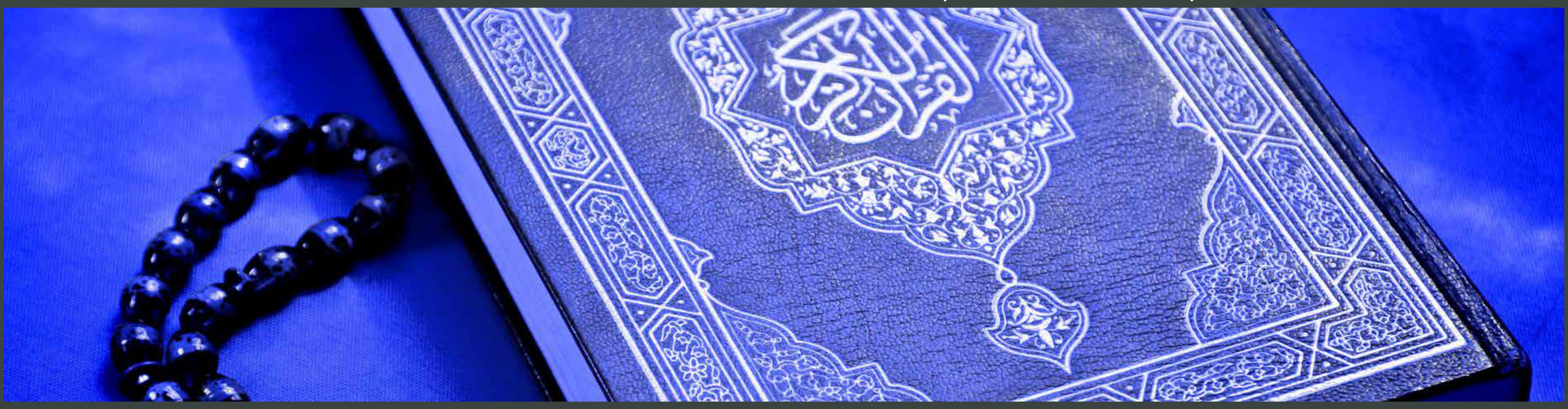

और यह केंद्र (मस्जदि) गरीबों और ज़रूरतमंदों के लएि शरण था, जहां राज्य और धर्मार्थ नकिायें उन्हें भोजन, कपड़े और घर प्रदान करते हैं। इसके अलावा यह उन अजनबयिों के लएि भी शरण था जो राज्य के बाहर से आते थे, तो वे भी यहीं रहते और यहीं भोजन करते थे।

और यह नागरयि नयिोजन जसिका पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहवि सल्लम) ने अपनी राजधानी में नर्िमाण कयिा, मस्जदि के पास की बाज़ार वालों और उसके घर वालों पर आधारति थी ताकि वे नयिंत्रण और कमान केंद्र से तथा आपस में एक दुसरे से जल्दी संपर्क कर सकें।

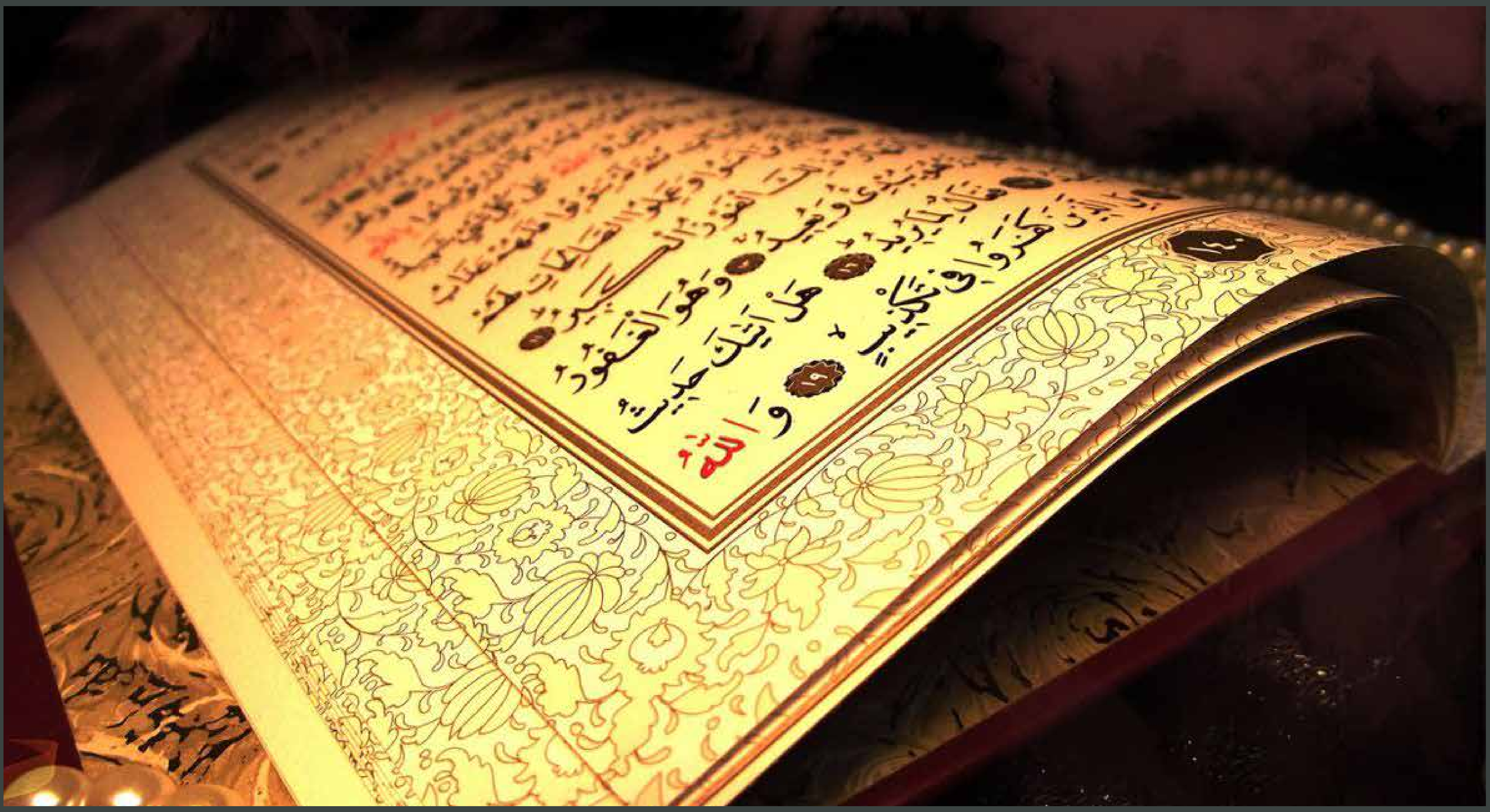

Observe este ejemplo, cuando él le pregunta a sus compañeros: **“¿Quién es el insolvente?”**, luego, espera por la respuesta aún pensando que la respuesta será incorrecta, pero este es su método intelectual de conversación para estabilizar la información. Luego, como era de esperar, sus estudiantes dieron una respuesta incorrecta; él los escuchó hasta que hubieron terminado, y luego les entregó la respuesta correcta. Hay muchos ejemplos similares de esta manera eficaz de educar en las enseñanzas de Muhammad, el Mensajero (paz y bendiciones sean con él).

Las instrucciones de Muhammad (paz y bendiciones sean con él) que obligan a las personas, tanto hombres como mujeres, a aprender y alcanzar un nivel educacional específico, y luego alentar a quien quiera estudiar más, tuvo un papel sustancial en el incremento eficaz en el ámbito educativo.

Algunas de sus instrucciones y enseñanzas en relación a esto: **“Buscar conocimiento es una obligación de cada musulmán”,** en los discursos de Muhammad (paz y bendiciones sean con él);en el Sagrado Corán, la palabra “musulmán” incluye tanto a hombres como mujeres.

पैगंबर मुहम्मद
(सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)

एक महान शिक्षक थे।

निष्पक्ष व ईमानदार शोधकर्ता उस अद्भुत क्षमता को देखकर आश्चर्यचकित हो जाएगा जो पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) को प्राप्त थी, जिसके द्वारा उन्होंने एक ऐसी कोम को जो लिखना और पढ़ना नहीं जानती थी , एक ऐसी कोम में बदल दिया जो ज्ञान पर गर्व करने लगी। और राज्य और समाज में बहुत उच्च स्तर के विद्वान होने लगे।

और इस सफलता के पीछे के रहस्य की खोज में, शोधकर्ता को यह ज्ञान होग कि सर्वशक्तिमान अल्लाह ने पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)को महान शैक्षिक क्षमताएं दी थीं। वह वाक्पटु वक्ता (भाषण देने वाला), एक दृढ़ व संतुष्ट करनेवाले व्याख्याता और एक सफल शिक्षक थे।और इस सफलता में जिस चीज़ ने उनकी मदद की वह यह कि वह बात चीत, ध्यान आकर्षित करने और मन व बुद्धि को सूचना और जानकारी के प्रति सचेत करने के तरीके अच्छी तरह से जानते थे।अतः मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की शैक्षिक सफलता में इन चीजों का मूलभूत प्रभाव था।

इस उदाहरण को ध्यान से देखें जब वह अपने अनुयायियों से पूछते हैं : “ दिवालिया(मुफ़लिस) कौन है? फिर वह उनके उत्तर की प्रतीक्षा करते हैं हालांकि वह जानते थे कि वे गलत उत्तर देंगे, लेकिन यह जानकारी को स्थिर करने के लिए बातचीत का बौद्धिक तरीका है, फिर सोचने के बाद उनके शिष्यों ने गलत उत्तर दिया, अतः उन्होंने ने उनका उत्तर सही तरह से सुना और फिर उन्हें सही उत्तर दिया।

मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की शिक्षाओं में इन सफ़ल शैक्षिक तरीकों के बहुत उदारहण हैं।

मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)ने ऐसी शिक्षाएं दीं जो सभी पुरुषों और महिलाओं को एक निश्चित स्तर तक शिक्षा प्राप्त करने के लिए बाध्य करती हैं, और फिर उन लोगों को प्रोत्साहित करते थे जो अधिक शिक्षा प्राप्त करना चाहते थे।और इस चीज़ ने गुणात्मक बदलाव में जो कि मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)ने शैक्षिक विभाग में किया था महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अतः उनकी शिक्षाओं में से एक यह कि:

طلب العلم فريضة على كل مسلم

(ज्ञान प्राप्त करना हर मुसलमान के लिए अनिवार्य है)
और मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)और उन पर उतरने वाली पुस्तक (पवित्र कुरआन) के निर्देशों में शब्द "मुस्लिम" पुरुष और महिला दोनों को शामिल है।

पैगंबर मुहम्मद
(सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)

युध्द में (कुलीन योद्धा)

लड़ाई व युध्द के अंदर दुश्मन सैनिकों के प्रति उनका बड़प्पन:

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)ने अपनी नेक व महान नैतिकता और पवित्र कुरआन की शिक्षाओं का पालन करते हुए , कभी भी किसी को धोखा नहीं दिया था, भले ही वह उनका दुश्मन हो। वह किसी के साथ किया हुआ अपना समझौता कभी नहीं तोड़ते थे जब तक कि विपक्ष उसे ना तोड़े। उन्होंने युध्द में, चाहे वह विजेता हों या उनका शत्रु, युद्ध के घायल और कैदियों (बंदियों) को यातनाएं नहीं दीं, उन पर अत्याचार नहीं किया और न ही उनके शवों के अंग काटे।बल्कि वह अपने सैनिकों और अपनी सैना के सिपाहियों को ऐसा करने से मना करते थे चाहे जो भी हो।और इस तरह से उन्होंने और उनके अनुयायियों ने युद्धों के दौरान मानवता को महान नैतिकता के लिए अद्भुत उदाहरण दिए।

युध्द में दुश्मन महिलाओं के प्रति उनका बड़प्पन:

इस अद्भुत उदाहरण को पढ़ें जो मन को पकड़ लेता है और भावनाओं को हिला देता है।

मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)के अपने शत्रुओं के साथ निर्णायक युद्धों में से एक युद्ध में उनकी सैना के एक सिपाही ने जिसका पालन आपके सैनिक स्कूल में हुआ था यानी आपके चचेरे भाई अली इब्ने अबु तालिब ने एक नकाबपोश दुश्मन सैनिक को देखा कि वह पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की सैना के घायल लोगों और लाशों के बीच घूम रहा है और उन्हें भयानक तरह से विकृत कर रहा है और उनके अंगों को काट रहा है यहाँ तक कि उसने उनके सबसे करीबी यानी उनके और उनके सबसे बड़े सरदार मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) के चाचा हज़रत हमज़ा के अंगों को भी बिगड़ दिया, इस दृश्य ने उन्हें भयभीत कर दिया और उन्होंने उस सैनिक को मारकर उस से बदला लेने की ठान ली, और तुरंत वह एक तेज़ तीर की तरह उसके पास पहुंच गए, लेकिन जैसे ही उन्होंने उसे मारने के लिए अपनी तलवार उठाई तो वह यह देखकर आश्चर्यचकित हो गए कि वह सैनी पुरुष नहीं बल्कि पुरुष के कपड़े पहने हुई एक दुश्मन महिला है। इस अद्भुत दृश्य और मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) के सैनिक के महान सिद्धांतों पर ध्यान दें; तो इस सिपाही ने दुश्मन के सर पर तलवार उठाने के पलों में बदले और उन उच्च सिद्धांतों के बीच संतुलन किया जो उसने मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) के विद्यालय में सीखे थे, अतः उस पर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की सिखाई हुई नेक और महान नैतिकता ग़ालिब आ गई, इसलिए उसने अपनी तलवार को नीचे गिरा दिया और अपने क्रोध को दबा दिया, और अपने साथियों के साथ की गई इतनी बुरी कार्रवाई के बावजूद उस महिला को छोड़ दिया।

तो देखो तो यह कैसी नैतिकता है? और य कैसे उच्च सिद्धांत हैं? यह कैसी महानता है? और दुश्मन होने के बावजूद भी महिला के लिए कैसा सम्मान और दया है?

यही तो पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) और उनके अनुयायियों की महानता है। और यही उह इस्लाम धर्म की महानता है जिसने उनको यह सिखाई।

बंदियों के साथ उनका बड़प्पन :

मानवाधिकारों के अधिकारपत्रों और अंतरराष्ट्रीय समझौतों के बावजूद अभी भी बंदी मनोवैज्ञानिक और शारीरिक यातना की हिंसा, और मानवाधिकारों के उल्लंघन के तहत कराह रहा है।

लेकिन चौदह से अधिक शताब्दियों से पहले ही ,मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध कैदी के साथ व्यवहार करने लिए पूरी दुनिया के लिए एक ऐसा शानदार क़ानून और सुंदर तरीका तैयार किया , जो अगर मानवता द्वारा लागू किया जाए , तो वह इस भ्रमित दुनिया में कैदियों की उन उलझनों से बाहर निकल जाएगी जो हर जीवित अंतरात्मा और महान नैतिकता वाले व्यक्ति की भावनाओं को झंझोड़ कर रख देती हैं।

और वह क़ानून यह है कि मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने कैदियों के अधिकारों का उल्लंघन करने को सख्त तरीके से मना किया है चाहे कोई भी कारण हो।

अतः उनके यहाँ कैदी को शारीरिक या नैतिक रूप से सजा देना सख्त मना है। और इसी तरह ही उसे कोसना, उसे गाली देना और उसे भोजन और पानी ना देना भी सख्त मना है। बल्कि क़ैदी पर मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) और उनके अनुयायियों की दया की यह हालत थी कि वे खाने और पाने में क़ैदी को अपने आप पर प्राथमिकतादे देते थे।

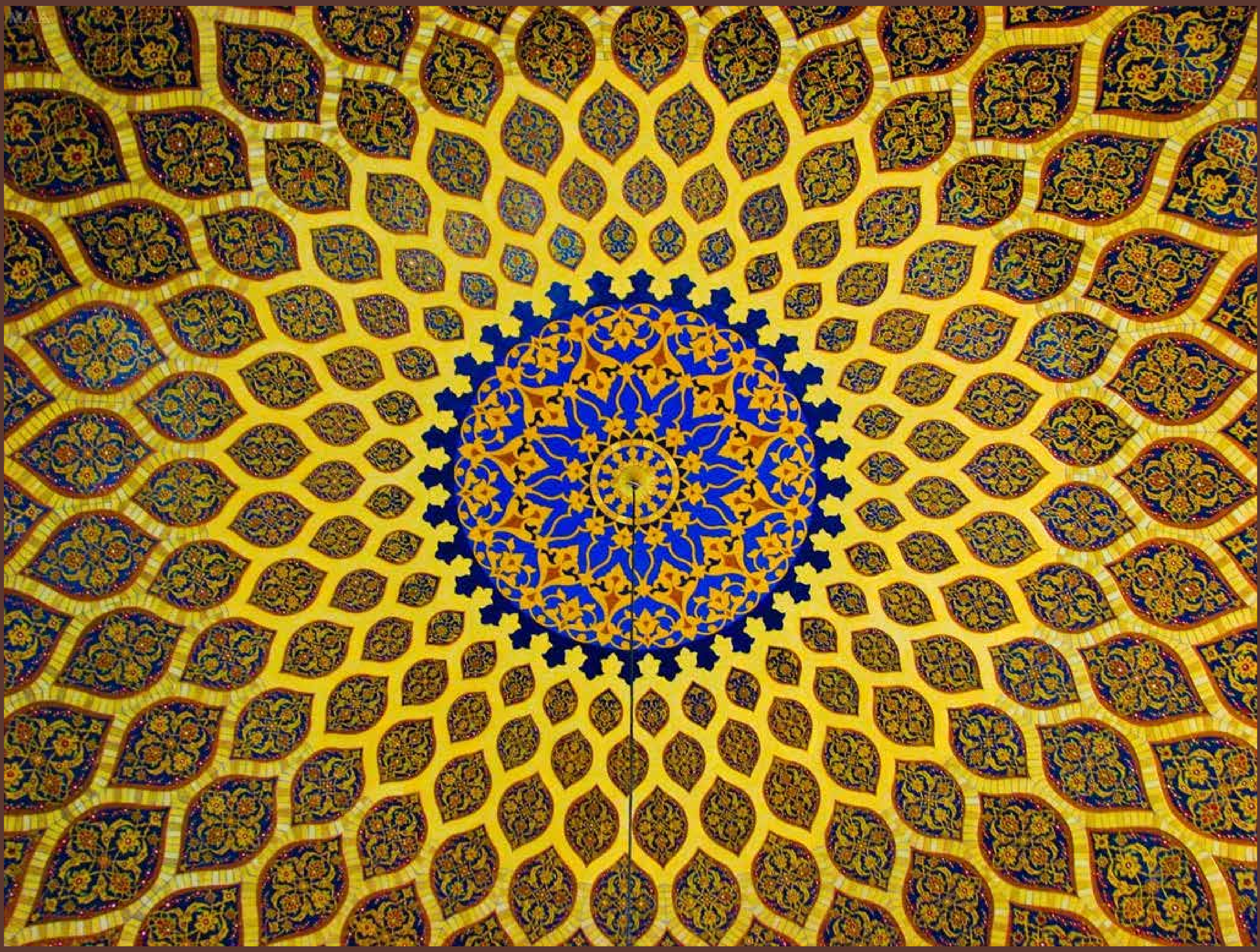

मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)के अनुयायियों के जीवन में तुम्हें इस तरह के बहुत उदाहरण और दृश्य मिल जाएंगे।

उन्हीं में से एक दृश्य वह है जिसको पवित्र कुरआन ने बयान किया और उसकी प्रशंसा की, अतः उसने मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम)के अनुयायियों की प्रशंसा करते हुए कहा :

وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا

(और वे दरिद्र, और अनात और क़ैदी को खाना खिलाते हैं उसकी मोहब्बत पर)

यानी मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) और उनके अनुयायी दरिद्र, अनात और क़ैदी को खाना खिलाने में अपने प्रति प्राथमिकता दे देते हैं हालांकि उन्हें स्वंयम उस खाने की सख्त जरूरत होती है।

अब आप मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) और उनके अनुयायियों के क़ैदियों के प्रति इन महान व्यवहारों को देखें।

आज इस ज़माने में कैदियों को मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि वि सल्लम) और उनकी शिक्षाओं की सख्त जरूरत है ताकि वे उनके घावों को भरें और उनकी चोटों का इलाज करें, उनके आंसुओं को पोंछें, और उन्हें उनके अधिकार बल्कि उनकी मानवता वापस दिलाएं जो विनाशक हथियारों और झूठे नामों के तहत गंदे युद्धों की सभ्यता ने छीन ली है

और अंत में अब हम यह कहते हैं कि समकालीन सभ्यता के मुकाबले में मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि वि सल्लम) को अपने उपर पूरी तरह से गर्व करना चाहिए क्योंकि वह मानधिकारों के सभी विभागों में व्यवहारिक रूप आगे हैं, ना केवल आदर्श वाक्य और दावे के रुप से जैसा कि समकालीन देश कर रहे हैं।

मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि वि सल्लम) के जीवन में आप एक भी ऐसा उदाहरण नहीं दिखा सकते जिसमें कैदियों पर शारीरिक या मानसिक रूप से से अत्याचार हुआ हो और उनके अधिकारों का उल्लंघन किया गया हो।

की नैतिकिता क़ुरआन थी

पैगंबर मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की प्यारी पत्नी ह़ज़रत आ़एशा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) से साबित है कि उन्होंने पैगंबर मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) विशेषता में ऐसा कहा।

अतः ह़ज़रत सअ़द बिन हिशाम बिन आ़मिर की मदीना आने की कहानी की लम्बी ह़दीस़ में है कि वह कुछ चीज़ो के बारे में पूछने के लिए ह़ज़रत आ़एशा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) के पास आए, वह कहते हैं कि:

" फिर मैंने कहा, ऐ मोमिनों की माँ, अल्लाह पैगंबर (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की नैतकिता के बारे में मुझे बताईये?

तो उन्होंने कहा : क्या तुम क़ुरआन नहीं पढ़ते हो? मैंने कहा : क्यों नहीं।

उन्होंने कहा : अतः पैगंबर (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की नैतकिता क़ुरआन थी।

वह कहते हैं कि फिर मैंने यह इरादा किया उठ जाऊं और मरते दम तक किसी से कुछ ना पूछूँ........ (मुस्लिम)

और एक दुसरी रिवायत में :
मैंने कहा :ऐ मोमिनों की माँ, अल्लाह पैगंबर (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की नैतिकता के बारे में मुझे बताईये?

उन्होंने कहा : ऐ मेरे बेटे! क्या तुम क्या तुम कुरआन नहीं पढ़ते हो? अल्लाह ने फ़रमाया है :

وإنك لعلى خلق عظيم

(और बेशक तुम्हारे एख़लाक़ बड़े आला दर्जे के हैं) मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की नैतिकता कुरआन है। (अबु यअ़्ला)

इमाम नवावी ने मुस्लिम की शरह में कहते हैं :
" इसका मतलब है : उस (कुरआन) पर अ़मल करना, उसकी सीमाओं को पार न करना, और उसके आदाब(और उसकी शिक्षाओं) को अपनाना, उसके उदाहरण और उसकी कहानियों से सीख लेना, उसमें सोच-विचार करना और उसको अच्छी तरह से पढ़ना।"

और इब्ने रजब ने " जामेउ़ल उ़लूम वल ह़िकम " में कहते हैं
" यानी पैगंबर मुह़म्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम) कुरआन के आदाबों (और उसकी शिक्षाओं) और उसकी नैतिकता को अपनाए हुए थे।

कुरान ने जिसकी प्रशंसा की उस में उनकी रज़ा और (प्रसन्नता) थी, और जिसकी उसने बुराई की उस में उनकी नाराज़गी (अप्रसन्नता) थी। और उन्हीं(हज़रत आ़एशा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो)) से दुसरी रिवायत है, उन्होंने कहा :
उनकी नैतिकता कुरआन थी, कुरआन की रज़ा में उनकी रज़ा थी और कुरआन की नाराज़गी में उनकी नाराज़गी थी। "

मुनावी ने " फैज़ुल क़दीर " में कहा :
यानी जो आदेश और निषेध और वचन और चेतावनियाँ और उनके अलावा दुसरी चीजे़ कुरआन ने बताईं।

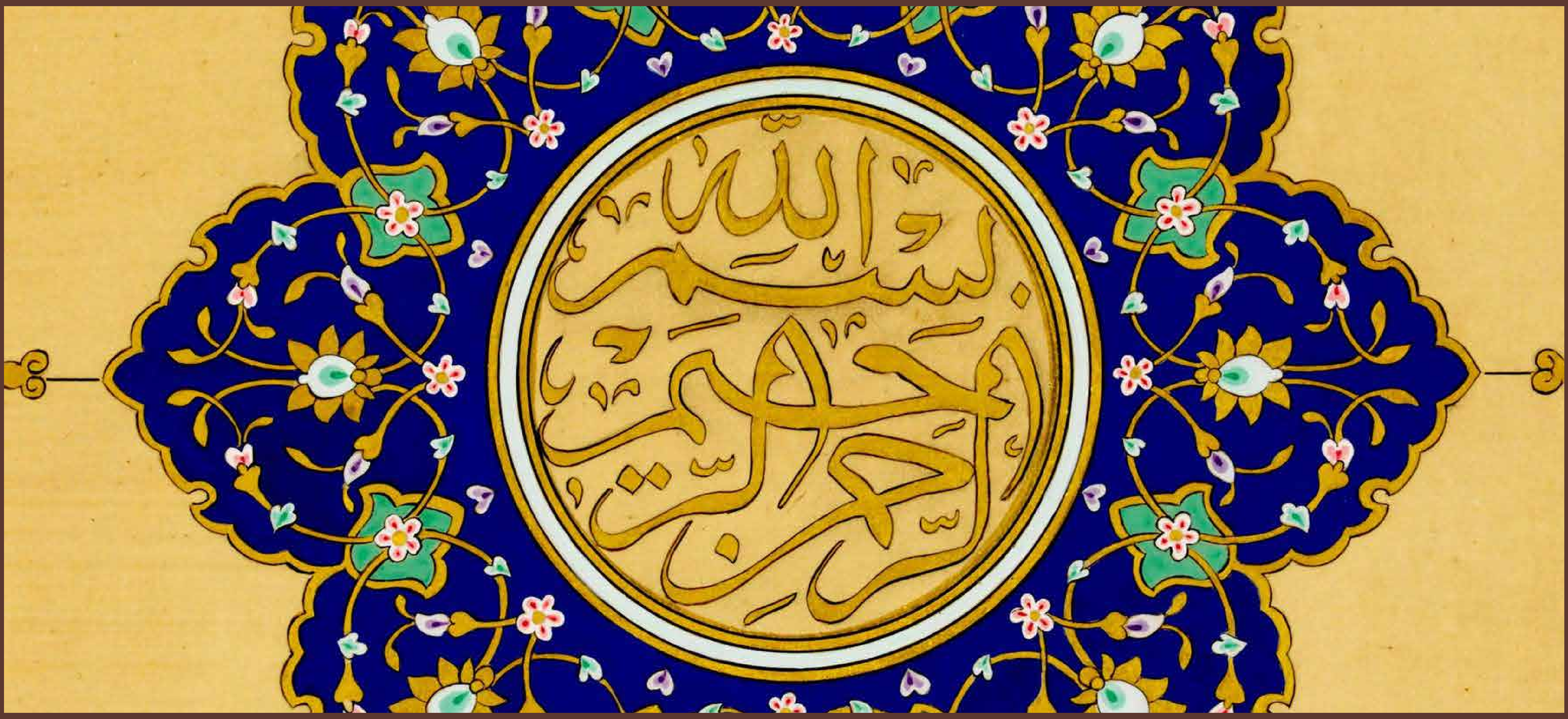

और क्ज़ी ने कहा :
यानी जो कुछ क़ुरआन में बयान हुआ वह सब उनकी नैतिकता थी, क्योंकि जो कुछ भी क़ुरआन ने अच्छा बताया है, जिस चीज़ की भी उसने प्रशंसा की है और जिसकी ओर उसने बुलाया है वे सब उनमें थीं। और जिस चीज़ को भी क़ुरआन ने बुरा बताया और उस से मना किया वह उनमें नहीं थीं और वह उस से दूर थे। अतः क़ुरआन उनकी नैतिकता का स्पष्ट बयान है। "

अबु ह़ामिद अल गज़ाली (अल्लाह उन पर दया करे) " एह़या उ़लूम अल दीन " में कहते हैं :

पैगंबर मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की नैतिकता की सभी अच्छाइयों का बयान है जिनको कुछ विद्वानों ने ह़दीसों से लेकर एक जगह इकट्ठा किया है, अतः वह कहते हैं :

(पैगंबर मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सबसे अधिक सहन शील व बर्दाश्त करने वाले, सबसे अधिक बहादुर, सबसे अधिक न्यायी व ईमानदार, सबसे अधिक पवित्र व पाक दामन थे, उन्होंने कभी किसी ऐसी महिला का हाथ नहीं छुआ जिसके वह मालिक नहीं थे या जो उनकी पत्नी नहीं थी या जो उन महिलाओं में नहीं थी जिन से शादी करना उनके लिए ह़राम था।

वह सबसे अधिक सख़ी थे, एक रात के लिए भी उनके पास दिरहम व दीनार नहीं रुके, यदि कुछ बच जाता और उनके पास कोई ऐसा व्यक्ति नहीं आता जिसे वह देते और रात हो जाती तो जब तक वह बचा हुआ माल किसी ऐसे व्यक्ति को जिसे उसकी आवश्यकता होती दे नहीं देते थे तब तक घर नहीं जाते थे। और जो भी अल्लाह उन्हें रोज़ी देता तो वह सबसे सरल जैसे खजूर और जों आदि में से केवल वह लेते जो उन्हें एक वर्ष तक काफी हो, और उसके अलावा सभ अल्लाह की राह में खर्च कर देते थे। जब भी किसी ने उनसे कोई चीज़ मांगी तो उन्होंने उसे दे दिया। और फिर अपनी एक वर्ष भर की रोज़ी में भी दे देते थे हा़लांकि कभी कभी वर्ष पुरा होने से पहले ही उन्हें आवश्यकता हो जाती थी। वह अपनी चप्पलें स्वयं सी लेते तथा स्वयं ही अपने कपड़ों पर पैबंद लाग लेते थे। और घर के कामों में अपने घर वालों की सहायता करते तथा उनके साथ गोश्त भी काटते थे। वह सबसे अधिक विनम्र और ह़या वाले व्यक्ति थे, अतः उनकी निगाह किसी के चेहरे पर जमी नहीं रहती थी। और गुलाम और आज़ाद सबकी दावत तथा सब उपहार स्वीकार करते थे अगरचे दूध का एक घूंट ही क्यों न हो और उनके बदले में कुछ देते भी थे। और वह दान की चीजें नहीं खाते थे। गुलाम महिला और मिसकीन (दरिद्र) उनसे कुछ कहते तो वह उनकी सुनते थे। अपने अल्लाह के लिए क्रोधित होते अपने लिए नहीं। और वह सदैव सत्य को लागू करते अगरचे उसके कारण उनका या उनके अनुयायियों का नुकसान हो।

अतः उन्होंने अपने सबसे अच्छे अनुयायियों में से एक को उस क्षेत्र में मरा हुआ पाया , जहाँ यहूदी रहते थे, लेकिन उन्होंने उनके साथ कठोर व्यवहार नहीं किया और न ही उस से अधिक कुछ कहा जो शरीअ़त द्वारा निर्धारित है, बल्कि उन्होंने अपने उस अनुयायि के बदले सो ऊंटनियाँ दियत में दीं हा़लांकि उनके अनुयायियों को केवल एक ऊंटनी की सख्त आवश्यकता थी। और वह भूख के कारण अपने पेट पर पत्थर बांधते थे।और उन्होंने हलाल खाने के अलावा कभी कुछ नहीं खाया तथा वह टेक लगाकर या मेज़ पर बैठ कर नहीं खाते थे।पूरी जिंदिगी कभी भी लगातार तीन दिन तक उन्होंने रोटी से पेट नहीं भरा। और वह ऐसा कंजूसी या गरीबी के कारण नहीं करते थे बल्कि वह कम खाना पंसद करते थे और अपने ऊपर दुसरे लोगों को तरजीह देते थे। और वह शादी की दावत स्वीकार करते, बिमारों को देखने के लिए जाते तथा अंतिम संस्कार में शामिल होते थे। और वह शत्रुओं के बीच बिना किसी चौकीदार के चलते थे। वह सबसे विनम्र और शांत थे, और घमंडी नहीं थे। बात करने में सबसे अच्छे थे तथा लम्बी बात नहीं करते थे। वह सबसे ज्यादा सुंदर दीखते थे। दुनियिवी किसी चीज़ के लिए वह चिंतित नहीं हुए । जो मिल जाता पहन लेते थे।और गुलामों या दुसरे लोगों को सवारी पर अपने पीछे बिठा लेते थे।सवारी के लिए जो चीज़ भी मिल जाती उसी पर सवार हो जाते थे, अतः कभी घोड़ा, तो कभी ऊंट पर , कभी खच्चर तो कभी गधे पर और कभी तो बिना टोपी, पगड़ी और चादर के पैदल ही चलते थे। मदीने के आखरी छेत्र में भी बीमारों को देखने के लिए जाते थे। वह खुश्बू व अच्छी गंध पसंद करते थे और बदबू व बुरी गंध से नफरत करते थे। और गरीबों के साथ बैठ जाते और मसिकीनों (दरिद्रों) के साथ खाना खा लेते थे। और अच्छी नैतकिता वाले लोगों को सम्मानित करते तथा मान- सम्मान वालों साथ दयालुता से व्यवहार करके उन लोगों के दिलों को आकृष्ट करते और उन्हें कोमल बनाते। वह अपने रिश्तेदारों के साथ रिश्तेदारी के संबंधों को सदैव निभाते थे और जो उनके रिश्तेदारों से बेहतर लोग थे तो उन पर वह अपने रिश्तेदारों को तरजीह नहीं देते थे। किसी के साथ सख्ती से व्यवहार नहीं करते थे। और माफी मांगने वालों को आप माफ कर देते थे। मजाक भी कर लेते थे लेकिन सत्य के सिवा कुछ नहीं कहते थे तथा खिलखिलाए व ठट्टा मारे बिना हंसते थे।

जायज़ खेल देखते तो उस से मना नहीं करते थे। अपनी पत्नी के साथ दौड़ भी लगाते थे। और जब उनके खिलाफ आवाज़ें उठती थीं तो वह सब्र व बर्दाश्त करते थे। उनके पुरूष और महिलाऐं गुलाम थीं लेकिन वह उनसे अच्छा नहीं खाते और पहनते थे। उनका कोई भी समय किसी ऐसे कार्य में नहीं गुज़रता था जो अल्लाह के लिए ना हो या फिर ऐसे कार्य में गुज़रता जो उनकी बहतरी के लिए आवश्यक हो।किसी गरीब को उसकी गरीबी या उसके दीर्घकालीन रोग के कारण हक़ीर नहीं समझते थे और न ही किसी बादशाह से उसकी बादशाहत के कारण डरते थे। वह दोनों को समान रूप से अल्लाह की तरफ बुलाते थे। उन्होंने अगर किसी मुस्लिम को क्रोध में कुछ कहा तो उनका वह कहना उसके लिए प्रयाश्चित्ति और दयालुता बन गया, अतः वह फरमाते हैं :

" मुझे दयालुता बनाकर भेजा गया है और अभिशाप देने वाला बनाकर नहीं भेजा गया है।"

और जब भी किसी मुस्लिम या गैर मुस्लिम को शाप देने के लिए कहा जाता तो वह शाप के बजाए उसे दुआ़ देते थे। उन्होंने कभी किसी को अपने हाथ से नहीं मारा। और जब भी उन से दो चीज़ों में से किसी एक को चुनने के लिए कहा जाता तो वह उनमें से आसान व सरल चीज़ को चुनते यदि उसमें कोई गुनाह या रिश्तेदारी के संबंध का टूटना ना होता। अल्लाह ने उन्हें भेजने से पहले तोरैत कितब में उनकी विशेषता बयान फ़रमाई, अतः फ़रमाया :

 मुह़म्मद अल्लाह के पैगंबर हैं, मेरे चुने हुए बन्दे हैं,वह न क्रुद्ध स्वाभाव, न कठोर ह्रदय और न ही बाजारों में शोर मचाने वाले हैं। औ बुराई का बदला बुराई से नहीं देते है बल्कि वह क्षमा व माफ कर देते हैं।

उनकी नैतिकता में से यह था कि वह जिससे मिलते थे पहले उसे सलाम करते थे, यदि उनके पास कोई किसी ज़रूरत के कारण आता (और उनके पास उसे देने कुछ नहीं होता) तो वह उसे सहन दिलाते यहां तक कि वह स्वयं ही चला जाता। और जब उनसे कोई हाथ मिलाता तो जब तक वह स्वयं ही अपना हाथ खींच ना लेता तब तक वह हाथ मिलाए रहते थे। और सभा में जैसे उनके अनुयायिि बैठते वैसे ही वह बैठते थे।

सर्वशक्तिमान अल्लाह पवित्र क़ुरआन में फ़रमाता है :
فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ لِنتَ لَهُمْ ۖ وَلَوْ كُنتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَانفَضُّوا مِنْ حَوْلِكَ(آل عمران : 159)

(तो कैसी कुछ अल्लाह की महरबानी है कि ऐ मह़बूब तुम उनके लिए कोमल ह्रदय हुए, और आगर तुन्दमिज़ाज (क्रुद्ध स्वाभाव) और कठोर ह्रदय होते तो वे ज़रूर तुम्हारे पास से परेशान हो जाते।

अल्लाह ने उन्हें अच्छी जीवनी और पूरी राजनीति (यानी सबसे अच्छा रवैया और आचरण, और लोगों के साथ व्यवहार करने और स्थितियों से निपटने का सबसे अच्छा तरीका) दी थी हालांकि वह उम्मी थे न ही लिखते थे और न ही (देखकर) पढ़ते थे, बकरियां चराने और गरीबी में रेगिस्तानों और अज्ञान व जहालत के नगर में बिना पिता और मां के अनाथ, वह पले औ बड़े हुए, लेकिन सर्वशक्तिमान अल्लाह ने सभी अच्छी नैतिकता, प्रिय तरीके, पहली और बाद की पीढ़ियों की खबरें, जिस चीज़ के द्वारा परलोक में सफलता और मुक्ति और दुनिया में खुशी मिले, ज़रूरी चीज़ों का पालन करना और अनावश्यक व फजूल चीज़ों से दूर रहना, यह सारी बातें उन्हें सिखा दीं।

अल्लाह उनके आदेश का पालन करने और उनके तरीके पर चलने में हमारी सहायता करे, आमीन या रब्बल आ़लामीन(सभी संसारों के मालिक) (संक्षिप्त रूप से उद्धरण समाप्त हुआ)

कोई व्यक्ति यह ना समझे कि यह जो कुछ पीछे बयान किया गया वह झूंटी कहानियां या ऐसे ही बकवास है जिसका वास्तव से कोई संबंध नहीं है, क्योंकि उपर जो कुछ भी बयान किया गया है उसका हर वाक्य और उसकी हर बात मसानीद, सहिाह़ और सुनन की बहुत सी सही ह़दीसो से साबित है। लेकिन मैंने संक्षिप्त के कारण उन्हें यहां नहीं लिखा, अतः जो उन्हें जानना चाहे तो वह इमाम तिर्मिज़ी की किताब (अश्शमाइल अल मुह़म्मदिया) को पढ़ सकता है।

PARTNERS OF SUCCES

Knowingallah.com

Guidetoislam.com

Islamicfiqh.net

Edialogue.org

www.rasoulallah.net

The Prophet's Personality

Sheikh/ Faraj Hadi

www.rasoulallah.net